सांध्य दैनिक
4PM
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्षः 10 ● अंकः 122 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, बुधवार, 5 जून, 2024
मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

मैंने ये जाना है कि डर का ना होना साहस नही है, बल्कि डर पर विजय पाना साहस है। बहादुर वह नहीं है जो भयभीत नहीं होता, बल्कि वह है जो इस भय को परास्त करता है।

–नेल्सन मंडेला

जीत के साथ शुरुआत करने उतरेगा... 7 | अरुणाचल में अपनों की नाराजगी... 3 | बसपा के जीरो बनने पर मुसलमानों... 2

फंस गए मोदी, कैसे बनेगी सरकार

संघ की रणनीति पर टिकी सबकी निगाहें

नीतीश और तेजस्वी की तस्वीरों ने मचाई सनसनी

» चंद्रबाबू नायडू के रुख से फंसा पेंच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में जारी लोकतंत्र का महापर्व अब सम्पन्न हो चुका है। जनता ने अपना जनादेश सुना दिया है। इस बार का जनादेश जहां विपक्ष को उत्साहित कर रहा है, तो वहीं पिछले एक दशक से सत्ता पर बैठी भाजपा के लिए ये जनादेश एक बहुत बड़ा झटका है, एक सीख है और कहीं न कहीं उसके अहंकार व घमंड का परिणाम है। इस जनादेश से बेशक विपक्षी गठबंधन इंडिया को पूर्ण बहुमत हासिल नहीं हुआ। लेकिन 400 पार की उम्मीदें पालकर चलने वाली सत्ताधारी भाजपा भी पूर्ण बहुमत तो दूर 250 सीटों तक के आंकड़े को तरस गई। ऐसे में 'एक अकेला सब पर भारी' का दंभ भरने वाले पीएम मोदी के लिए अब इस बार एनडीए के पूर्ण बहुमत में आने के बावजूद सरकार बनाना और उसे चलाना मुश्किल हो गया है। या यूं कहें कि एक टेढ़ी खीर बन गई है।

2014 और 2019 में अकेले दम पर पूर्ण बहुमत पाने वाली भाजपा इस बार 240 सीटों पर ही लटक गई है। ऐसे में अब उसे सरकार बनाने के लिए अपने सहयोगियों के साथ की जरूरत है। जिनकी बैसाखी के सहारे ही भाजपा सत्ता के सिंघासन तक पहुंच सकेगी। हालांकि, इसके बाद नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बनेंगे या पांच साल बने रह पाएंगे ये कहना काफी मुश्किल लगता है। क्योंकि नरेंद्र मोदी ने कभी गठबंधन की सरकार नहीं चलाई है। इसलिए लोगों को कैसे साथ में लेकर चलना है ये मोदी साहेब को नहीं आता है। क्योंकि गठबंधन की सरकार में मोदी अपनी तानाशाही नहीं चला पाएंगे और न ही कोई उनकी तानाशाही को बर्दाश्त कर सकेगा। गठबंधन में सभी की सुनना पड़ती है और सभी को साथ लेकर चलना पड़ता है। यही कारण है कि एनडीए के बहुमत में आने के बावजूद ये तय नहीं हो पा रहा है कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे या फिर पिछले पांच साल से हाशिए पर चल रहा संघ किसी नए चेहरे पर दांव लगाता है। लेकिन इस सबसे पहले एक बात ये भी देखने वाली है कि अपने चिकने घड़े जैसे व्यक्तित्व के लिए मशहूर जेडीयू मुखिया नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के होने वाले नए-नवेले मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की भूमिका क्या होती है। क्योंकि भले ही बीजेपी के पास 240 सीटें हों लेकिन इस बार किंगमेकर की भूमिका में नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू ही हैं। ऐसे में अब उन्हें संतुष्ट कर पाना भाजपा व मोदी के लिए टेढ़ी खीर बनता जा रहा है।

नीतीश के बगल में बैठे तेजस्वी

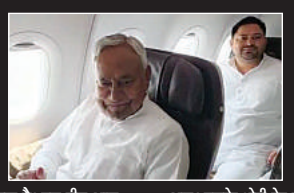

नीतीश कुमार इस बार सबसे बड़े किंगमेकर की भूमिका में हैं। इसीलिए एनडीए और इंडिया दोनों ही नीतीश कुमार पर डोरे डाल रहे हैं। बेशक अभी नीतीश एनडीए में हैं लेकिन नीतीश की फितरत से भी हर कोई भली-भांति वाकिफ है। इस बीच आज दिल्ली में होने वाली एनडीए और इंडिया की बैठक के लिए दोनों गठबंधन के नेता दिल्ली पहुंच रहे हैं। इस बीच बिहार से हवाई जहाज के अंदर की कुछ तस्वीरें सामने आई हैं जिन्होंने दिल्ली तक में हलचल मचा दी है और मोदी की बेचैनी को और भी बढ़ा दिया है। दरअसल, एनडीए की बैठक में शामिल होने के लिए नीतीश पटना से दिल्ली पहुंचे। इस दौरान वह जिस विमान से दिल्ली पहुंचे, उसी में राजद नेता तेजस्वी यादव भी सवार थे। इसी दौरान विमान से कुछ तस्वीरें सामने आईं जिनमें तेजस्वी पहले नीतीश के ठीक पीछे वाली सीट पर बैठे नजर आए। इसके थोड़ी देर बाद दोनों पास-पास बैठे भी नजर आए। दोनों के चेहरे पर मुस्कान दिखी। तेजस्वी पीछे से उठकर नीतीश की बगल वाली सीट पर जा बैठे। उन्होंने मुख्यमंत्री की तबीयत के बारे में पूछा, उनका हाल चाल लिया। नीतीश ने भी तेजस्वी की कुशलता जानी। इस तस्वीर के सामने आने के बाद राजनीतिक गलियारे में तरह-तरह की अटकलें लगने लगी हैं।

एनडीए में शुरू हो गई खींचतान

आज शाम दिल्ली में एनडीए की अहम बैठक होने वाली है। लेकिन इससे पहेल अभी से ही ऐसी खबरें आने लगी हैं कि सहयोगी दलों द्वारा भाजपा पर दबाव बनाना शुरू कर दिया गया है। इस सबके बीच नजरें टिकी हैं नीतीश कुमार पर, क्योंकि उनकी पार्टी जनता दल यूनाइटेड एनडीए में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी है। जेडीयू ने 12 सीटें हासिल की हैं। ऐसे में जाहिर है कि नीतीश कुमार भाजपा से सरकार में बड़ी हिस्सेदारी की मांग करेंगे और अहम मंत्रिपद चाहेंगे। सूत्र बता रहे हैं कि जेडीयू ने 3 या उससे अधिक कैबिनेट मंत्रियों की मांग की है। साथ ही बिहार को विशेष राज्य का दर्जा भी नीतीश की शर्तों में शामिल है। सिर्फ नीतीश ही नहीं इसके अलावा शिवसेना के एकनाथ शिंदे भी 1 कैबिनेट और 2 एमओएस चाहते हैं। इसके अलावा चिराग पासवान 1 कैबिनेट और 1 राज्य मंत्री की मांग कर सकते हैं। जीतन राम माझी भी मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री बनना चाहते हैं।

नायडू की बड़ी मांगों ने बढ़ाई बेचैनी

एनडीए की सरकार और मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने की चाबी इस समय अगर किसी के हाथ में है तो वो नीतीश कुमार और टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू ही हैं। ऐसे में जाहिर है कि ये दोनों ही भाजपा पर जमकर दबाव बनाएंगे या यूं कहें कि बनाने लगे हैं। मोदी और नायडू का रिश्ता कैसा है ये किसी से छिपा नहीं हैं। ये जग जाहिर है कि चंद्रबाबू नायडू नरेंद्र मोदी को पसंद नहीं करते हैं। यही कारण है कि अभी से ही ये खबरें आने लगी हैं कि टीडीपी कई बड़ी-बड़ी डिमांड कर रही है। सबसे बड़ी डिमांड लोकसभा स्पीकर पद को लेकर रहने वाली है, जिस पर टीडीपी दावा ठोकने लगी है। कहा जा रहा है कि नायडू 5 से लेकर 6 या फिर इससे ज्यादा भी मंत्रालय मांग सकते हैं। इनके अलावा नायडू आंध्र प्रदेश के लिए स्पेशल स्टेटस भी मांग सकते हैं। यह उनकी काफी पुरानी मांग रही है।

फिर बढ़ेगा संघ का कद!

इस सबके बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर भी सबकी निगाहें टिकी हैं। जैसे-जैसे मोदी का कद बढ़ा है, वैसे-वैसे आरएसएस को किनारे किया जाने लगा। इस बार के चुनाव प्रचार के दौरान तो भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने यहां तक कह दिया था कि उनको अब आरएसएस की जरूरत नहीं रह गई। नड्डा ने कहा था कि अब बीजेपी को आरएसएस के पीछे चलने की जरूरत नहीं है। आरएसएस की नाराजगी का ही नतीजा रहा कि इस बार पूरे चुनाव के दौरान आरएसएस उतनी सक्रियता से नहीं दिखाई दी। इसी का खामियाजा रहा कि भाजपा को उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में भी मुंह की खानी पड़ी। ऐसे में मोदी के तानाशाही रवैये से नाराज चल रहा संघ इस फैसले से काफी संतुष्ट नजर आता है। अब देखना ये भी होगा कि संघ प्रधानमंत्री पद के लिए किसका नाम आगे करता है। पीएम मोदी अब संघ से अलग होकर कैसे चल पाते हैं। क्योंकि इन नतीजों के बाद संघ की अहमियत फिर से बढ़ना तय है।

बसपा के जीरो बनने पर मुसलमानों पर बरसीं मायावती

बोलीं- आगे से सोच-समझकर दिया जाएगा इन्हें मौका, लोगों को सोचना है उनका भविष्य अब कितना सुरक्षित रह पाएगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के नतीजे सामने आने के बाद अब समीक्षाओं का दौर जारी है। राजनीतिक दलों और नेताओं के साथ-साथ राजनीतिक विश्लेषक भी अपने-अपने तरीके से समीक्षाएं कर रहे हैं। नतीजों ने भाजपा को उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक चौंकाया है। लेकिन इस चुनाव में सबसे ज्यादा नुकसान अगर किसी का हुआ है तो वो है मायावती की बहुजन समाज पार्टी। 2019 में 10 सीटें जीतने वाली बसपा इस बार एक भी सीट नहीं जीत पाई और 2014 की तरह एक बार फिर शून्य पर सवार हो गई। जाहिर है कि चुनाव नतीजों के बाद बसपा सुप्रीमो का पारा हाई होना बनता है। अब बीएसपी प्रमुख मायावती ने नतीजों पर सोशल मीडिया पर पत्र के जरिए अपनी प्रतिक्रिया दी है। इसमें उन्होंने खास तौर पर मुस्लिम समाज को लेकर नाराजगी जताई है।

बीएसपी सुप्रीमो ने कहा कि बहुजन समाज पार्टी का खास अंग मुस्लिम समाज, जो पिछले कई चुनावों में और इस बार भी उचित प्रतिनिधित्व देने के बावजूद भी बीएसपी को ठीक से नहीं समझ पा रहा है। अब ऐसी स्थिति में आगे इनको काफी सोच समझ कर ही चुनाव में पार्टी द्वारा मौका दिया जाएगा, जिससे आगे पार्टी को भविष्य में इस बार की तरह भयंकर नुकसान ना हो।

चौंकाने वाले परिणाम की थी उम्मीद

मायावती ने कहा कि चुनाव के दौरान देश भर में लगभग पूरे समय मंहगाई, गरीबी और बेरोजगारी से त्रस्त लोगों में यह आम चर्चा रही कि अगर चुनाव फ्री एण्ड फेयर हुआ और ईवीएम में कोई गड़बड़ी आदि नहीं हुई तो फिर चुनाव परिणाम निश्चय ही, खासकर रूलिंग पार्टी के नेताओं के दावों के मुताबिक नहीं होकर, चौंकाने वाला जरूर होगा।

यूपी के परिणामों पर करेंगे समीक्षा: बसपा प्रमुख

बसपा प्रमुख ने उत्तर प्रदेश पर बात करते हुए कहा कि चुनाव में खासकर यूपी की तरफ पूरे देश की निगाहें टिकी हुई थीं। हमारी पार्टी नतीजों को गंभीरता से लेकर इसका हर स्तर पर गहराई से सही विश्लेषण करेगी और पार्टी व मूवमेन्ट के हित में जो भी जरूरी होगा कदम भी उठाएगी क्योंकि बीएसपी एक राजनीतिक पार्टी के साथ-साथ लोगों के आत्म-सम्मान व स्वाभिमान का एक मूवमेन्ट भी है। इसीलिए हमारी प्रतिक्रिया भी विशुद्ध रूप से देश के लोकतंत्र और परमपूज्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संविधान की पवित्रता व मजबूती को समर्पित होगी, जिससे देश के करोड़ों गरीबों, शोषितों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों एवं मुस्लिम व अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों के हित व कल्याण तथा उनकी सुरक्षा एवं सम्मान आदि पर मंडराता खतरा दूर हो। मायावती ने आगे कहा कि मेरा यही कहना है कि बाबा साहेब के बताए रास्तों पर चलकर पूरी लगन, निष्ठा और ईमानदारी के साथ मेहनत से कार्य करना ही अपना मिशनरी धर्म है। हमारी इसी सोच और शक्ति ने सदियों से शोषित व उपेक्षितों को आत्म-सम्मान एवं स्वाभिमान के साथ जीने के लिए संघर्ष करते रहना सिखाया है और सरकार बनने पर 'सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक तरक्की के तहत् उनके जीवन को काफी हद तक बदला भी है।

देश में 424 सीटों पर लड़ी थी बसपा

मायावती ने अपने पत्र के आखिरी में कहा कि इस चुनाव में बीएसपी का अकेले ही, पार्टी से जुडे लोगों के बलबूते पर बेहत्तर रिजल्ट के लिए हर मुमकिन प्रयास किया गया है, जिसमें खासकर दलित वर्ग में से मेरी खुद की जाति के लोगों ने वोट देकर जो अपनी अहम मिशनरी भूमिका निभाई है, मैं पूरे तेहदिल से आभार प्रकट करती हूं। बता दें कि इस बार के लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी ने देश भर में 424 सीटों पर अपने कैंडिडेट्स उतारे थे। इसमें से उत्तर प्रदेश की 79 सीटें भी शामिल थीं। यूपी में पिछले लोकसभा चुनाव में एसपी और आरएलडी के साथ गठबंधन में बीएसपी ने 10 सीटें जीती थीं लेकिन इस बार के चुनाव पार्टी को एक भी सीट नहीं मिल सकी।

पीएम मोदी को नैतिक आधार पर दे देना चाहिए इस्तीफा : पी. चिदंबरम

» बोले- जनता चाहती है एक नई सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद विपक्ष काफी उत्साहित है। बेशक विपक्ष को बहुमत नहीं मिला है और कांग्रेस भी 99 सीटों पर ही आकर रुक गई है, लेकिन फिर भी विपक्ष उत्साहित है और भाजपा को भी पूर्ण बहुमत न मिलने पर पीएम मोदी से प्रधानमंत्री न बनने की बात कह रहा है। इसी क्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री व कांग्रेस नेता पी चिदंबरम ने लोकसभा चुनाव के रिजल्ट के बाद कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सत्ता में बने रहने का अधिकार खो दिया है। इसलिए उन्हें नैतिकता के आधार पर खुद ही स्तीफा दे देना चाहिए।

भाजपा पर जमकर निशाना साधते हुए चिदंबरम ने कहा कि मोदी सरकार बरोजगारी और महंगाई को कम करने में नाकाम रही है। लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा को कुल 240 सीट मिलीं, जो कि बहुतम के आंकड़े 272 से 32 सीटें दूर है। हालांकि, चुनाव परिणाम के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आश्वस्त किया कि भाजपा लगातार तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है। लेकिन भाजपा को सरकार बनाने के लिए जेडीयू प्रमुख नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की तेलगू देशम पार्टी पर निर्भर रहना होगा।

बेरोजगारी-महंगाई की अनदेखी पड़ी बीजेपी को भारी

चिदंबरम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को अब सत्ता छोड़ देनी चाहिए। पिछली बार भाजपा ने 303 सीटें जीती थीं और इस बार 370 सीटें जीतने का दावा किया था, लेकिन पार्टी 240 के आसपास ही सिमट गई। मोदी सरकार ने लोगों के दो सबसे बड़े मुद्दे बेरोजगारी और महंगाई को स्वीकार नहीं किया। मोदी सरकार में बेरोजगारी और महंगाई दोनों चरम पर हैं। चिदंबरम ने आगे कहा कि 2024 लोकसभा चुनाव के जनमत से स्पष्ट हो गया है कि वो नई सरकार चाहते हैं। राजनीतिक पार्टियों को जनता के फैसले का सम्मान करते हुए नई सरकार बनानी चाहिए। चिदंबरम ने कहा कि भाजपा ने एनडीए के 400 पार का दावा किया था लेकिन वो 240 पर ही सिमट गए। हालांकि, कांग्रेस को लेकर चिदंबरम का कहना है कि 99 सीटें जीतने के साथ ही कांग्रेस में काफी मजबूती हुई है।

लोकतंत्र में न्यायपालिका की होती है महत्वपूर्ण भूमिका : सीजेआई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने ऑक्सफोर्ड यूनियन सोसाइटी में दिए अपने भाषण में कहा कि देश के संवैधानिक लोकतंत्र के मूल में चुनाव हैं, लेकिन जज संवैधानिक मूल्यों की निरंतरता को दर्शाते हैं, जो इस व्यवस्था की रक्षा करते हैं।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में समाज में निर्णायकों की मानवीय भूमिका विषय पर मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि न्यायपालिका में पारदर्शिता लाने में तकनीक की अहम भूमिका है। सोशल मीडिया पर न्यायाधीशों की आलोचना की बात को स्वीकार करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि प्रौद्योगिकी का समग्र प्रभाव न्यायपालिका को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने में मदद करना है।

मोदी और योगी के मंत्री भी नहीं बचा सके अपनी सीट

» केंद्र के सात और प्रदेश सरकार के दो मंत्रियों की हुई हार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने काफी हद तक चौंकाया है। लेकिन सबसे अधिक अगर किसी ने चौंकाया है तो वो हैं उत्तर प्रदेश के चुनाव परिणाम। जिस उत्तर प्रदेश में भाजपा 80 में से 70 सीटें जीतने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही थी, उस यूपी में बीजेपी इंडिया गठबंधन से भी नीचे आ गई। जबकि यहां खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत 12 केंद्रीय मंत्री चुनाव मैदान में थे। लेकिन यहां 12 केंद्रीय मंत्रियों में से सात मंत्री और प्रदेश की योगी सरकार के दो मंत्री चुनाव हार गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह सहित पांच केंद्रीय मंत्री अपनी सीटों से चुनाव जीते हैं। इनकी जीत भी उस बड़े अंतर से नहीं हुई है, जिसकी अपेक्षा पार्टी कर रही थी।

कई मंत्रियों की हुई हार

हारने वाले केंद्रीय मंत्रियों में स्मृति ईरानी, डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय, संजीव बालियान, साध्वी निरंजन ज्योति, भानू प्रताप वर्मा, अजय मिश्रा टेनी तथा कौशल किशोर के नाम शामिल हैं। अनुप्रिया पटेल हारते-हारते जीती हैं। प्रदेश सरकार के मंत्री दिनेश प्रताप सिंह और जयवीर सिंह भी चुनाव हार गए हैं। प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद और अनूप प्रधान जीतने में सफल रहे हैं। वहीं इंडिया गठबंधन से कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव के साथ ही सैफई परिवार से लड़े सभी सदस्य चुनाव जीत गए हैं।

बीजेपी के कई दिग्गज भी हुए फेल

चुनाव नतीजे बता रहे हैं कि 2014 से पूरी ताकत के साथ भाजपा को सत्ता में लाने वाले यूपी के मतदाताओं का आज पूरे दस साल बाद 2024 में भाजपा से मोहभंग हुआ है। पूरे चुनाव के दौरान चर्चा में रहे अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर को सहेजने वाली अयोध्या सीट से भाजपा प्रत्याशी लल्लू सिंह को सपा प्रत्याशी अवधेश प्रसाद ने चुनाव हरा दिया है। भाजपा के अन्य दिग्गज नेताओं में पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी, भोजपुरी अभिनेता दिनेश लाल यादव निरहुआ, महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री कृपाशंकर सिंह, पूर्व पीएम चंद्रशेखर के पुत्र नीरज शेखर, प्रदेश सरकार में मंत्री व निषाद पार्टी के अध्यक्ष डा. संजय निषाद के पुत्र प्रवीण निषाद, प्रदेश सरकार में मंत्री व सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर के पुत्र अरविंद राजभर जैसे बड़े नेता भी चुनाव हार गए हैं।

अपने गढ़ में मजबूत हुए हुड्डा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रोहतक। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की शानदार वापसी से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा न केवल अपने गढ़ देशवाली बेल्ट में मजबूत हुए हैं, बल्कि प्रदेश की बागड़ व जीटी रोड बेल्ट में भी तीर निशाने पर लगा है।

अहीरवाल बेल्ट में कांग्रेस भाजपा को कड़ी टक्कर देने में कामयाब रही जबकि पांच साल पहले प्रदेश में कांग्रेस से सफाया हो गया था। प्रदेश के अंदर राजनीति को क्षेत्र के हिसाब से छह भागों में बांटा जाता है। एक तरफ पंचकूला से लेकर पानीपत तक जीटी रोड बेल्ट है। इससे आगे देशवाली बेल्ट है, जिसमें रोहतक, झज्जर व सोनीपत जिला आता है। फरीदाबाद से लेकर नारनौल तक यादव बाहुल्य दक्षिण हरियाणा की अहीरवाल बेल्ट है। भिवानी, हिसार व सिरसा बागड़ बेल्ट में आते हैं जबकि जींद, कैथल व फतेहाबाद का इलाका बांगर बेल्ट कहलाता है। इसके अलावा फरीदाबाद व पलवल का क्षेत्र है, जो यूपी से सटा है।

लोकतंत्र की लौ को जलाए रखने के लिए आभार : उमर अब्दुल्ला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू-कश्मीर। जम्मू-कश्मीर की बारामूला लोकसभा सीट से चुनाव हारने के बाद नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने लोकतंत्र की लौ को जलाए रखने के लिए मतदाताओं का आभार व्यक्त किया। अब्दुल्ला को जेल में बंद पूर्व विधायक शेख अब्दुल रशीद उर्फ इंजीनियर रशीद ने 2,04,142 मतों से हराया। पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष सज्जाद गनी लोन भी मैदान में थे। राशिद वर्तमान में गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत दर्ज एक मामले में दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद है।

उमर अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया मंच पर एक पोस्ट में कहा कि कल के शोरगुल, गहरी व्यक्तिगत निराशा, राष्ट्रीय

परिणामों तथा अन्य जगहों पर जम्मू कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस की जीत को देखते हुए थोड़ी संतुष्टि के बीच मैं उत्तरी कश्मीर के मतदाताओं, खासकर मेरे लिए वोट देने वाले मतदाताओं को धन्यवाद देना भूल गया, जो बाहर आए और अपनी आवाज बुलंद करने के लिए अपने वोट का इस्तेमाल किया। मतदान केंद्रों पर आने और लोकतंत्र की लौ को जलाए रखने के लिए आपका धन्यवाद। नेकां ने कश्मीर में श्रीनगर और अनंतनाग-राजौरी पर बड़े अंतर से जीत हासिल की है।

अरुणाचल में अपनों की नाराजगी से कांग्रेस को लगा झटका

भाजपा ने धीरे-धीरे बढ़ाई राज्य में ताकत

» विधानसभा की जीत में खांडू का दिखा दम

» 19 सीटों पर लड़ा चुनाव, जीती सिर्फ 1 सीट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्वोत्तर के प्रमुख राज्य अरुणाचल में बीजेपी ने बहुमत हासिल कर लिया है। कभी वहां पर कांग्रेस का दबदबा था। अब वहां पर बीजेपी ने अपनी ताकत बढ़ाई है। 1980 से 2014 तक अरुणाचल में कांग्रेस का जलवा था। आज सिर्फ 1 सीट अरुणाचल प्रदेश में कांग्रेस के पास है। अरुणाचल प्रदेश में 1980 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 13 सीटें जीती थीं, तब यहां विधानसभा की कुल 30 सीटें थीं। इसके बाद 1984 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 30 में से 21 सीटों पर जीत दर्ज कर सरकार बनाई थी। बीजेपी को तब सिर्फ एक सीट से संतुष्ट होना पड़ा था।

आज कांग्रेस को उसी स्थिती का सामना करना पड़ रहा है। विधान सभा में कांग्रेस का प्रदर्शन एक बार फिर बेहद निराशाजनक रहा। बीजेपी ने अरुणाचल प्रदेश की 60 सदस्यीय विधानसभा में 46 सीट जीतकर लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की है। अरुणाचल प्रदेश में कभी कांग्रेस का जलवा था, लेकिन अब स्थिति यह है कि 60 विधानसभा क्षेत्रों में से 41 पर उसे उम्मीदवार भी नहीं मिले। एक ऐसा राज्य जहां की राजनीति पर कांग्रेस का दबदबा तीन दशकों से अधिक समय तक कामय रहा, वहां देश की सबसे पुरानी पार्टी की ये दशा हैरान करती है.

कांग्रेस ने 2019 के विधानसभा चुनाव में चार सीटें जीती थीं, लेकिन इस बार पार्टी की स्थिति बेहद खराब नजर आई। कांग्रेस इस विधानसभा चुनाव में सिर्फ 19 सीटों पर चुनाव लड़ी थीं। अरुणाचल कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओं ने चुनाव मैदान में उतरने से पहले ही हाथ खड़े कर दिये। कई नेताओं के नाम भी फाइनल हो गए थे, लेकिन उन्होंने पार्टी हाईकमान के आदेश की अवहेलना करते हुए चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया। कुमार वाई, जिन्हें पूर्वी कामेंग जिले के बामेंग निर्वाचन क्षेत्र से मैदान में उतारा गया था, चुनावी मुकाबले में कांग्रेस के एकमात्र विजेता रहे हैं।

अरुणाचल में बढ़ी बीजेपी

बीजेपी को अरुणाचल प्रदेश की 60 सदस्यीय विधानसभा में 46 सीट जीतकर लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की, पार्टी को 2019 की तुलना में चार अधिक सीटें मिली हैं। विधानसभा चुनाव में प्रचंड जीत हासिल करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने विपक्षी दलों, विशेषकर कांग्रेस का सफाया कर दिया, जिसके खाते में केवल एक सीट आई और यह एनपीपी (5), राकांपा (3) तथा पीपीए (2) के बाद पांचवें स्थान पर खिसक गई। तीन सीट निर्दलीय उम्मीदवारों के खाते में गई। विपक्षी कांग्रेस ने 60 सदस्यीय विधानसभा में 19 उम्मीदवार उतारे थे और वह केवल बामांग सीट से जीत हासिल करने में कामयाब रही जहां राज्य के पूर्व गृह मंत्री कुमार वाई ने भाजपा के डोबा लामनियो को 635 मतों के मामूली अंतर से हराया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नबाम तुकी ने कहा कि पार्टी चुनाव परिणामों से निराश है लेकिन हतोत्साहित नहीं है, उन्होंने कहा, हम हार के कारणों पर आत्मनिरीक्षण करेंगे और आने वाले दिनों में संगठन पर काम करेंगे।

अरुणाचल में खेमा बदलते रहे कांग्रेस नेता?

कांग्रेस सूत्रों के बताया कि भाजपा के साथ कथित तौर पर साठगांठ करने वालों को निशाना बनाते हुए पार्टी के कई वरिष्ठ सदस्यों को पहले ही निष्कासित कर दिया गया था, जिनमें उम्मीदवारों की शॉर्टलिस्ट में से नौ नेता शामिल थे, जिन्होंने चुनाव ही नहीं लड़ा. सूत्रों ने बताया कि पीसीसी की अनुशासनात्मक समिति ने उन्हें छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया। इन उम्मीदवारों ने पार्टी को यह भी सूचित नहीं किया कि वे चुनाव नहीं लड़ने जा रहे हैं। कांग्रेस के एक पदाधिकारी ने बताया कि उन्होंने आखिरी क्षण तक कांग्रेस के टिकट के लिए संघर्ष किया, लेकिन बाद में पीछे हट गए, अरुणाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री नबाम तुकी ने कांग्रेस नेताओं के चुनाव मैदान से आश्चर्यजनक पलायन के लिए मनी पावर को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि पार्टी की अनुशासन समिति की सिफारिशों के अनुसार दलबदलुओं को निष्कासित किया जाता रहेगा। हम निस्संदेह निराश हैं, लेकिन हतोत्साहित नहीं हैं।

चुनाव से पहले ही कांग्रेस नेताओं ने छोड़ा मैदान

अरुणाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही कांग्रेस की मुश्किलें सामने आ गई थीं। कांग्रेस ने इस चुनाव के लिए 35 उम्मीदवारों की सूची तैयार की थी, जिनमें से 10 ने अपना नामांकन दाखिल ही नहीं किया। बाकी बचे उम्मीदवारों में से पांच ने अपना नाम अंतिम समय में वापस ले लिया। कनुबारी में एक अन्य उम्मीदवार, सोम्फा वांगसा ने नामांकन पत्रों की जांच के बाद सीट सरेंडर कर दी और भाजपा में शामिल हो गईं। इसे लेकर कांग्रेस पार्टी काफी खफा है और सख्त कदम उठाने के बारे में सोच रही है, ताकि भविष्य में पार्टी के सामने ऐसे विकट समस्या सामने न आए।

पूर्वोत्तर में अब भी क्षेत्रीय दलों का व्यापक जनाधार

पूर्वोत्तर के दो राज्यों- अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के विधानसभा चुनाव परिणाम सामने आ गये हैं। दोनों ही राज्यों में जनता ने वर्तमान सरकार को ही दोबारा सेवा का अवसर दिया है। हालांकि यह दोनों परिणाम बहुत बड़े संदेश भी देकर गये हैं। पहला संदेश यह है कि भाजपा ने पूर्वोत्तर में अपनी जड़ें गहरें तक जमा ली हैं। दूसरा संदेश यह है कि कांग्रेस यहां खत्म हो चुकी है। तीसरा संदेश यह है कि क्षेत्रीय दल पूर्वोत्तर में व्यापक जनाधार रखते हैं। अरुणाचल प्रदेश को विकास की तमाम सौगातें मिली हैं, जिस तरह यहां सड़क संपर्क को लेकर तेजी से काम हुआ है और सुदूर इलाकों तथा देश के अंतिम गांवों में भी बुनियादी सुविधाओं को मजबूत किया गया है उसके चलते प्रदेश की जनता भाजपा के साथ खड़ी है। इसके अलावा भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में जिस तरह युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए तमाम तरह के वादे किये थे और इस राज्य में पर्यटन को नये पंख देने के लिए जो रूपरेखा जनता के बीच रखी थी उसका भी प्रभाव चुनावों में देखने को मिल रहा था। यहां भाजपा की लोकप्रियता का आलम यह था कि चुनावों की घोषणा के साथ ही पार्टी ने 10 सीटों पर निर्विरोध जीत हासिल कर ली थी। अरुणाचल में मुख्यमंत्री पेमा खांडू की लोकप्रियता भी काफी थी और उनके कामकाज को लोग पसंद करते हैं। यहां चुनावों के दौरान भाजपा ने कांग्रेस मुक्त अरुणाचल के नाम से जो अभियान चलाया था उसको भी काफी सफलता मिली थी क्योंकि जहां-जहां से यह यात्रा गुजरती थी वहां-वहां के कांग्रेसी नेता या कार्यकर्ता भाजपा का दामन थाम रहे थे। कांग्रेस को अरुणाचल प्रदेश में जो एक विधानसभा सीट मिली है वह दर्शा रही है कि पार्टी यहां खत्म हो चुकी है। यह स्थिति तब है जब हाल ही में अपनी भारत जोड़ो यात्रा लेकर राहुल गांधी ईटानगर पहुँचे थे और भाजपा पर तमाम प्रहार किये थे।

अरुणाचल में कांग्रेस का अर्श से फर्श तक का सफर

अरुणाचल प्रदेश में 1980 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 13 सीटें जीती थीं, तब यहां विधानसभा की कुल 30 सीटें थीं। इसके बाद 1984 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 30 में से 21 सीटों पर जीत दर्ज कर सरकार बनाई थी। बीजेपी को तब सिर्फ एक सीट से संतुष्ट होना पड़ा था। 1990 में अरुणाचल प्रदेश में परिसीमन के बाद विधानसभा सीटों की संख्या डबल यानि 60 हो गईं। इस बार भी कांग्रेस का दबदबा कायम रहा और कांग्रेस की झोली में 37 सीटें आईं। साल 1995 में हुए अरुणाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस 43 सीटों के साथ और बड़ी पार्टी बनकर उभरी। इस साल कांग्रेस ने सभी 60 सीटों पर चुनाव लड़ा था। इसके बाद 1999 के चुनाव में तो कांग्रेस ने यहां रिकॉर्ड ही बना दिया। विधानसभा की 60 में से 53 सीटों पर शानदार जीत दर्ज कर विपक्षीयों को सोचने पर मजबूर कर दिया। हालांकि, 2004 में कांग्रेस की विधानसभा सीटें घटीं, लेकिन 34 सीटें जीतकर कांग्रेस तब भी सत्ता पर काबिज रही। 2009 में कांग्रेस के खाते में 42 सीटें आईं। 2014 में फिर कांग्रेस की 42 सीटों पर जीत हुई। लेकिन इसके बाद 2019 में तस्वीर पलट गई। इस बार बीजेपी के खाते में 41 सीटें आईं और कांग्रेस सिर्फ 4 सीटों पर सिमट कर रह गई।

सिक्किम में बड़े दलों से ज्यादा छोटे दलों पर रहा विश्वास

सिक्किम में भाजपा या कांग्रेस से कोई नाराजगी नही है लेकिन हम चाहते हैं कि यहां की सरकार कोई क्षेत्रीय दल ही संभाले। लोगों ने कहा था कि यदि भाजपा या कांग्रेस यहां सत्ता में आ गयी तो वह हमारे खूबसूरत राज्य को शिमला, दार्जिलिंग जैसा भीड़भाड़ वाला इलाका बना देंगी। लोगों ने कहा कि भाजपा या कांग्रेस के यहां सत्ता में आने पर दिल्ली के लोग आकर गंगटोक में होटल ही होटल बना देंगे और यहां आने वाली गाड़ियों की संख्या बढ़ने पर हमारा राज्य भी वायु प्रदूषण की समस्या झेलने लगेगा। लोगों ने कहा था कि इस शांत राज्य की क्या जरूरतें हैं इस बात को क्षेत्रीय दल भलीभांति समझते हैं इसलिए हम उनको ही वोट देंगे। लोगों ने कहा कि 25 साल तक हमने पवन कुमार चामलिंग को मौका दिया और अब युवा मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग अच्छा काम कर रहे हैं तो उन्हें ही अवसर देना चाहिए। लोगों ने यह भी कहा था कि भाजपा या कांग्रेस की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री दिल्ली के निर्देश पर काम करेगा लेकिन क्षेत्रीय दल का मुख्यमंत्री बनने पर वह यहां की जनता के हिसाब से काम करेगा। बहरहाल, यह दोनों चुनाव परिणाम दर्शा रहे हैं कि स्थानीय जनता विकास को और अपने राज्य की तरक्की को तवज्जो देती है। साथ ही दोनों राज्य की जनता ने खिचड़ी सरकार बनाने से परहेज कर स्पष्ट और प्रचंड बहुमत वाली सरकार बनाकर अपनी विद्वता का भी परिचय दिया है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

लोकतंत्र में जनता ही होती है जनार्दन

जनता ने अपना जनादेश दे दिया है। इस बार लोगों ने विपक्ष को मजबूत कर दिया है। कांग्रेस ने अपने पिछले दो लोकसभा चुनाव में दो अंकों की गिनती को इसबार के चुनाव में मजबूत कर लिया है। चुनावों के नतीजे ये तो दर्शा ही रहे हैं कि जनता ने सत्ता परिवर्तन के लिए तो वोट नहीं दिया पर विपक्ष को ताकत जरूर दे दी है। साथ ही उसने बीजेपी को पिछली बार की अपेक्षा कम सीटों पर समेट कर यह बता दिया वह अगर किसी को सिर आंखों पर बिठाती है तो किसी बात से अगर नाराज हो गई तो उसे धूल भी चटा देती है। ये चुनाव जहां विपक्ष को मजबूती दे रहा है वहीं वह सत्ता में बैठी बीजेपी को सबक भी दे रहा है कि मनमानी करना भारी पड़ सकता है। लोकतंत्र में व्यक्ति नहीं जनता व सामूहिकता ही सबसे बड़ी होती है। वह ही निर्धारित करती है कि कौन सत्ता में रहेगा और कौन उससे बाहर। कुल मिलाकर दो-तीन दिनों में नई सरकार के प्रारूप का दृश्य नजर आ जाएगा। इस बार नई सरकार से उम्मीद की जानी चाहिए कि वह बरोजगारी, महंगाई जैसे आम जन के मुद्दों पर ज्यादा ध्यान देगी।

इससे पहले एग्जिट पोल के नतीजे कांग्रेस और भाजपा दोनों को यह स्पष्ट संदेश दे रहे हैं कि भारतीय राजनीति में उन्हें यदि प्रासंगिक बने रहना है तो अपनी नीति रीति में व्यापक बदलाव करने होंगे, अन्यथा लोग क्षेत्रीय दलों को आगे बढ़ाएंगे जो कि उनके अरमानों के सच्चे और अच्छे प्रतिबिंब होते हैं। कोई भी एग्जिट पोल चुनाव परिणाम तो नहीं होता, लेकिन बातों ही बातों में चुनाव परिणामों की ओर इशारे कर जाता है, जो अक्सर समय की कसौटी पर सही साबित होते आये हैं, कुछ प्रायोजित अपवादों को छोड़कर। ये भाजपा और कांग्रेस के बीच जनाधार के जबर्दस्त फासले के भी संकेत दे रहे हैं। इससे पहले 2014 का जनादेश हो या 2019 का, लोगों ने मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस को लोकसभा की कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटों का भी जनादेश नहीं दिया था, जिससे दोनों लोकसभा में उसका कोई वैधानिक नेता प्रतिपक्ष तक नहीं बन पाया। लेकिन इसबार कांग्रेस की मतों का प्रतिशत लगभग 35 से 40 प्रतिशत रहा जो इसबात का संकेत है कि जनता ने विपक्ष को मजबूती प्रदान कि है ताकि वह सत्ता में बैठी सरकार पर अंकुश लगाते रहे और आम जनता के सरोकारों को उठाते रहे। ऐसे में चर्चा आम है कि लोगों को मोदी सरकार की संतुष्टिकरण वाली नीतियां तो पसंद हैं, लेकिन कतिपय राजनीतिक व प्रशासनिक मामलों में उनकी मनमानी नापसंद भी है। इसलिए उन्हें थोड़ा कमजोर करते हुए उनके सामने एक मजबूत विपक्ष देने की कोशिश की है, ताकि दूरगामी व्यापक जनहित की रक्षा की जा सके।

संजय

चुनावों के नतीजे ये तो दर्शा ही रहे हैं कि जनता ने सत्ता परिवर्तन के लिए तो वोट नहीं दिया पर विपक्ष को ताकत जरूर दे दी है। साथ ही उसने बीजेपी को पिछली बार की अपेक्षा कम सीटों पर समेट कर यह बता दिया वह अगर किसी को सिर आंखों पर बिठाती है तो किसी बात से अगर नाराज हो गई तो उसे धूल भी चटा देती है। ये चुनाव जहां विपक्ष को मजबूती दे रहा है वहीं वह सत्ता में बैठी बीजेपी को सबक भी दे रहा है कि मनमानी करना भारी पड़ सकता है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

आर्थिकी के मजबूत होकर आगे बढ़ने की उम्मीदें

डॉ. जयंतीलाल भंडारी

देश के आर्थिक परिदृश्य में शुभ संकेत दिखाई दे रहे हैं। हाल ही में केंद्रीय सांख्यिकी संगठन ने वर्ष 2023-24 में देश की विकास दर 8.2 फीसदी रहने संबंधी रिपोर्ट जारी की है। देश के शेयर बाजार फर्राटा भर रहे हैं। आर्थिक व वित्तीय बाजार मजबूत हो रहे हैं। वित्तीय और गैर वित्तीय क्षेत्रों के दमदार बही-खाते भारत की आर्थिक ताकत बढ़ा रहे हैं। रिजर्व बैंक द्वारा भारत सरकार को दिया गया रिकॉर्ड लाभांश, शेयर बाजार में निवेशकों का उत्साह और दुनिया की प्रमुख क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों द्वारा भारत के विकास के प्रभावी विश्लेषण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

गौरतलब है कि हाल ही में वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ने मजबूत आर्थिक वृद्धि, तेज आर्थिक सुधार और बढ़ती राजकोषीय मजबूती के मद्देनजर भारत की रेटिंग को स्थिर यानी स्टेबल से बदलकर पॉजिटिव कर दिया है। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि पिछले तीन साल में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की औसत वास्तविक वृद्धि दर 8.1 फीसदी सालाना रही है और अब यह विकास दर अगले तीन साल में लगातार 7 फीसदी के करीब होगी। इन्वेस्टमेंट बैंकर गोल्डमैन सैक्स ने अपनी रिपोर्ट में 2024 में भारत की विकास दर को बढ़ाकर 6.7 प्रतिशत कर दिया है। अन्य महत्वपूर्ण नई रिपोर्टों के तहत अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष- आईएमएफ ने 6.8 प्रतिशत, एशियाई विकास बैंक-एडीबी ने 7 प्रतिशत तथा विश्व बैंक ने 7.5 प्रतिशत विकास दर रहने के अनुमान व्यक्त किए हैं। विशेषज्ञों का मत है कि भारत की विकास दर आगामी दशक तक 6.5-7 प्रतिशत के स्तर पर दिखाई देगी। विभिन्न रिपोर्टों में रेखांकित किया जा रहा है कि भारत में वर्ष 2023-24 में प्रत्यक्ष कर संग्रह 17.7 फीसदी बढ़कर 19.58 लाख करोड़ रुपए हो गया है। इसी तरह वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) उच्चतम स्तर पर रहा है। इसका आकार 20.18 लाख करोड़ रुपए रहा है, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 11.7 फीसदी अधिक है।

कर संग्रह के ये आंकड़े अर्थव्यवस्था में तेज उछाल और व्यक्तियों तथा कॉर्पोरेट सेक्टर की आमदनी में वृद्धि को दर्शाते हैं। आरबीआई द्वारा हाल ही में सरकार के लिए अब तक के सबसे अधिक लाभांश की राशि सुनिश्चित की गई है, वहीं दूसरी ओर शेयर बाजार में सूचकांक की जो रिकॉर्ड ऊंचाई दिखाई दे रही है,

उससे दुनिया में भारत के नए तेज विकास की संभावनाएं आगे बढ़ी हैं। रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में सरकार को 2.11 लाख करोड़ रुपये लाभांश देने की मंजूरी दी है जो बजट अनुमान की तुलना में 107 फीसदी ज्यादा है। यह सरकार के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में 1.09 लाख करोड़ रुपये के अप्रत्याशित लाभ जैसा है। रिजर्व बैंक ने पहली बार आकस्मिक जोखिम बफर (सीआरबी) बढ़ाकर 6.5 फीसदी कर दिया गया है, जो पहले 6 फीसदी था। रिजर्व बैंक द्वारा रिकॉर्ड लाभांश देने के निर्णय और वैश्विक आर्थिक संगठनों व क्रेडिट एजेंसियों के द्वारा 2024-25 में भारत की ऊंची विकास दर के अनुमानों के बाद भारतीय शेयर बाजार को लाभ मिला। बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण पांच लाख करोड़ डॉलर के पार पहुंचने के साथ ही भारत इस मुकाम तक पहुंचने वाला पांचवां सबसे बड़ा देश बन गया है। कोरोना के बाद भारतीय घरेलू खुदरा निवेशकों की रुचि शेयर बाजार में बढ़ी है। पिछले 10 साल में डीमेंट अकाउंट 2.3 करोड़ से बढ़कर 15 करोड़ हो गए हैं और म्यूचुअल फंड-निवेशकों की संख्या 1 करोड़ से 4.5 करोड़ हो गई। पिछले 10 पूर्व जो सेंसेक्स 25,000 अंकों पर था, आज 75,000 अंक से अधिक पर पहुंच गया। लाखों छोटे निवेशक बाजार से जुड़े हैं। भारत चौथा सबसे बड़ा शेयर बाजार है और वैश्विक निवेशकों का भरोसा भी इस पर बढ़ा है। ऐसी आर्थिक मजबूती से देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) में वृद्धि होगी। यह देश की उत्पादक क्षमता बढ़ाएगा और वृद्धि की संभावनाओं को बेहतर करेगा। ऐसे माहौल में न केवल देश में ज्यादा एफडीआई लाने में मदद मिलेगी, बल्कि यह विदेशी कंपनियों और निवेशकों को प्रोत्साहित करेगा कि वे भारत से हुई कमाई को फिर भारत में ही निवेश करें। इससे भारत में कारोबारी माहौल में सुधार होगा।

यह सुधार घरेलू निवेशकों को भी बड़े पैमाने पर निवेश बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगा। एफडीआई यानी विदेशी निवेशक तकनीकी विशेषज्ञता भी लाते हैं। चूंकि भारत लगातार चालू खाते के घाटे से जूझ रहा है और भारत को विदेशी बचतों को हासिल करने की जरूरत है, इसलिए एफडीआई विदेशी बचतों के सबसे टिकाऊ स्रोत के रूप में लाभप्रद होगा। निश्चित रूप से वर्ष 2023-24 में भारत की विकास दर के 8.2 प्रतिशत रहने, शेयर बाजार के बढ़ने, रिजर्व बैंक द्वारा सरकार को बंपर लाभांश दिए जाने से सरकार को व्यय प्रबंधन में खासी मदद मिलेगी।

प्राकृतिक पूंजी की लूट से उपजा सभ्यता का संकट

देविंदर शर्मा

अप्रैल के आखिरी सप्ताह में देहरादून में भारतीय वन सेवा (आईएफएस) अधिकारी प्रशिक्षुओं के 2022 बैच के दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के भाषण के संपादित अंश पढ़े, तो मुझे आलोक शुक्ला की याद आ गई। जो एक अथक योद्धा और छत्तीसगढ़ बचाओ आंदोलन के संयोजक थे। आलोक शुक्ला ने एक सफल सामुदायिक अभियान का नेतृत्व किया था, जिसके तहत हसदेव अरण्य के प्राचीन जंगलों में 445,000 एकड़ जैव विविधता से समृद्ध जंगलों को बचाया। दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा था, 'जब जंगलों की अहमियत समझने की बात आती है तो मनुष्य जानबूझकर खुद को भूलने के रोगियों में शामिल कर लेता है- यह जंगल की आत्मा है जो पृथ्वी को चलाती है।'और उसी भावना से जिस भाव से उन्होंने उस दिन उत्तीर्ण होने वाले सभी अधिकारियों को बधाई दी, मुझे लगता है कि यह स्वीकार करना उचित होगा कि आलोक शुक्ला भी समाज में प्रगति के प्रतीक हैं।

अब इससे पहले कि आप मुझसे पूछें कि आलोक शुक्ला कौन हैं और उन्होंने जंगलों को बचाने के लिए क्या अभूतपूर्व योगदान दिया है, और वह भी ऐसे समय में जब उच्च आर्थिक विकास हासिल करने के लिए जंगलों की लूट को पूर्व-अपेक्षित क्षति माना जाता है, उन्हें 2024 के गोल्डमैन पर्यावरण पुरस्कार से नवाजा गया है, जिसे 'ग्रीन नोबेल' भी कहा जाता है। वह इस वर्ष सम्मान पाने वाले छह महाद्वीपों के सात बहादुरों में से एक हैं। निडर और साहसी, सबसे शक्तिशाली आर्थिक ताकतों से लोहा लेने की उनकी अदम्य भावना ने छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्र में लगभग 4.5 लाख एकड़ के अमूल्य आदिम जंगलों में लाखों पेड़ों को बचाया है। हसदेव समुदाय ने न केवल उस विशाल जैविक संपदा की रक्षा के लिए सभी बाधाओं के खिलाफ संघर्ष किया है, बल्कि यह सामुदायिक प्रयास मानवता के हित में प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में भी मदद करेगा।

यदि मैं पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता के अर्थशास्त्र (टीईईबी) दृष्टिकोण को लागू करने वाले वास्तविक लेखांकन मानदंडों का उपयोग करके आर्थिक मूल्य का पता लगाने का प्रयास करूं, तो इसकी कीमत कई ट्रिलियन भारतीय रुपये होगी। जब मैंने इससे पहले कहा कि आलोक शुक्ला बेहद शक्तिशाली आर्थिक ताकतों के विरुद्ध सक्रिय रहे (और अभी भी हैं) तो यह संदर्भ हसदेव अरण्य के जंगलों में अलॉट की गयी 21 नियोजित कोयला खदानों के संबंध में था। आदिवासी समुदायों की ओर से एक लंबी और सतत मुहिम के बाद, उन्होंने साल 2012 में जो हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति गठित की, उसने प्रतिरोध को इस तरह से संगठित किया कि वह प्रभावी बन गयी, और आखिरकार सर्वाधिक शक्तिशाली कॉर्पोरेशन में से कुछ को मिले 21 नियोजित कोयला खानों के परमिट रद्द करने के लिए सरकार को मजबूर करने में सफल रही। इस प्रक्रिया में, स्थानीय समुदायों द्वारा सतत संघर्ष, जिसमें अनगिनत धरने, गढ़वाल के पहाड़ों में विख्यात चिपको आंदोलन की तरह पेड़ों को लिपटना और राज्य की राजधानी रायपुर की ओर 166 किलोमीटर कूच, शामिल है।

यदि किसी को इस संघर्ष, जारी रहे आंदोलनों और समुदायों के उत्पीड़न की कार्रवाई का एक दस्तावेज तैयार करना हो तो यह नेटफ्लिक्स, प्राइम और अन्य ओटीटी प्लेटफार्मों के लिए एक आकर्षक डॉक्युमेंटरी सीरीज होगी। यह निश्चित तौर पर हाथी की फुसफुसाहट नहीं थी बल्कि ये अति आधुनिक आरा मशीनें थी जिनका आदिवासियों को सामना करना था। गोल्डमैन पर्यावरणीय पुरस्कार भी ऐसे समय पर आया है जब चिपको आंदोलन अपनी 50वीं वर्षगांठ बना रहा है। डाउन टू अर्थ पत्रिका के 16-30 अप्रैल, 2024 अंक में वर्णित है कि चिपको आंदोलन ने देशव्यापी पर्यावरण चिंताओं को प्रेरित किया था और नीति निर्माण पर प्रभाव डाला था। उस परिवर्तन का नेतृत्व करने वाले चंडी प्रसाद भट्ट याद करते हैं, 'जब ठेकेदार और मजदूर साल 1973 में मार्च माह की एक सुबह रैणी गांव के जंगल को काटने के लिए पहुंचे, तो गांव में कोई आदमी नहीं था। चंडी प्रसाद आगे बताते हैं कि 'गौरा देवी, जो उस समय महिला मंडल की मुखिया थीं, अन्य महिलाओं को जंगलों में ले गयी और पेड़ों से लिपट गयी।' बाकी आगे सब इतिहास है।

चिपको आंदोलन को याद करना इसलिए महत्वपूर्ण है कि हसदेव के जंगलों में भी महिलाओं को पेड़ों से लिपटना पड़ा था। लेकिन गढ़वाल क्षेत्र में लकड़ी काटने आने वाले लकड़ी व्यवसायियों के उलट यहां छत्तीसगढ़ में राज्य सरकार से मदद और शह प्राप्त शक्तिशाली कंपनियां थीं। इसलिए शायद छत्तीसगढ़ को पेड़ों को बचाने के लिए कुछ ज्यादा करने की जरूरत थी, और यही बात थी कि वहां सामुदायिक प्रतिरोध जरूरी हो गया था। पर्यावरणीय संरक्षण के साथ आर्थिक विकास का संतुलन बनाने की बात अकसर की जाती है लेकिन जब मानवता के लिए जंगलों को बचाने का मामला होता है, खासकर मौसम में उबाल के वक्त, हमेशा अर्थशास्त्र को ही प्राथमिकता दी जाती है। जबकि यह ज्ञात है कि दुनिया के कुछ सबसे बड़े उद्योग हर साल अनुमानित 7.3 ट्रिलियन डॉलर मूल्य की प्राकृतिक पूंजी को निगल जाते हैं जो स्पष्ट रूप से पृथ्वी ग्रह को सभ्यता के संकट की ओर ले जा रहा है। यह भी कि जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों की लूट की इजाजत दी जा रही है, उसमें कहीं जरा भी पछतावा नजर नहीं आता। जंगलों के कटान की वजह से वातावरण में वैश्विक जलीय चक्र सूख रहे हैं।

कमर दर्द से तुरंत राहत दिलाएंगे ये योगासन

अक्सर जीवनशैली में गड़बड़ी, खानपान में पौष्टिकता की कमी और गलत पोस्चर के कारण शरीर में दर्द की समस्या हो सकती है। पहले बड़े-बुजुर्गों को शरीर दर्द की शिकायत हुआ करती है लेकिन अब कम उम्र में भी लोगों को शरीर दर्द की शिकायत बढ़ रही है। अधिकतर महिलाओं को उठने-बैठने और झुकने में पीठ व कमर में दर्द की परेशानी रहती है। समस्या से निजात के लिए डॉक्टर से सलाह जरूर लेनी चाहिए। इसके अलावा कुछ योगासन के अभ्यास से भी पीठ व कमर दर्द की परेशानी को कम किया जा सकता है और पोस्चर में सुधार लाया जा सकता है।

व्यक्ति के जीवन में पीठ का दर्द एक आम समस्या हो गयी है। जिससे हर व्यक्ति हर दिन परेशान होता है।

शलभासन

पोस्चर में सुधार और पीठ दर्द से राहत पाने के लिए शभलासन का अभ्यास कर सकते हैं। इस आसन को करने के लिए पेट के बल लेटकर दोनों हथेलियों को जांघों के नीचे रखें। दोनों पैरों की एड़ियों को आपस में जोड़कर पैर के पंजे को सीधा रखें। धीरे-धीरे पैरों को ऊपर उठाने की कोशिश करें। दोनों पैरों को ऊपर की ओर ले जाते समय गहरी सांस लें और इस अवस्था में कुछ देर रहने के बाद पैरों को नीचे की ओर लाएं। रीढ़ की हड्डी और कटी प्रदेश मजबूत होता हैं। साइटिका (गृध्रसी) से पीड़ित व्यक्तिओ के लिए विशेष लाभकारी हैं। कमर और पैरो को मजबूती मिलती हैं। गर्दन और कंधो के स्नायु को मजबूती प्राप्त होती हैं। पेट और कमर की अतिरिक्त चर्बी कम करने में सहायक हैं।

भुजंगासन

कमर दर्द से राहत पाने के लिए भुजंगासन का अभ्यास फायदेमंद है। इस आसन को करने के लिए जमीन पर पेट के बल लेटकर पैरों को आपस में मिलाएं और हथेलियों को सीने के पास कंधों की सीध पर रखें। माथे को जमीन पर रखकर शरीर को सहज करें। अब गहरी सांस लेते हुए शरीर के आगे के हिस्से को ऊपर की तरफ उठाएं। दोनों हाथों को सीधा उठाते हुए 15-20 सेकेंड इसी मुद्रा में रहें। फिर सांस छोड़ते हुए सामान्य मुद्रा में लौट आएं। भुजंगासन पीठ की मांसपेशियों को स्वस्थ रखने में असरदार योग है।भुजंगासन को पाचन, लिवर और किडनी के कार्यों में सुधार करने वाला योगासन माना जाता है। यह आसन रीढ़ की हड्डी को मजबूत करता है। छाती और फेफड़ों, कंधों और पेट की मांसपेशियों को फैलाता है। तनाव और थकान को दूर करने में मदद करता है। साइटिका की समस्या को कम करने में लाभदायक।

उष्ट्रासन

उष्ट्रासन करने के लिए घुटनों के बल बैठकर दोनों घुटनों की चौड़ाई कंधों के बराबर रखें। तलवे आसमान की तरफ उठाएं और रीढ़ की हड्डी को पीछे की तरफ झुकाते हुए दोनों हाथों से एड़ियों को छूने का प्रयास करें। ध्यान दें कि इस स्थिति में रहते समय गर्दन पर अधिक दबाव न पड़े और कमर से लेकर घुटनों तक का हिस्सा सीधा रहे। इस अवस्था में रहकर गहरी सांस लें। कुछ देर बाद अपनी सामान्य अवस्था में लौट आएं। इस आसन की मदद से पीठ, हिप्स और टखनों के दर्द को कम करने में मदद मिलती है। साथ ही शरीर अच्छे से स्ट्रेच भी होता है। इस योगासन की मदद से आप दिमाग को शांत कर सकते हैं और तनाव से दूर रह सकते हैं। सिर दर्द और अनिद्रा की समस्या में भी आप इस आसन को कर सकते है। इससे पाचन संबंधी समस्याओं और एब्स को टोन करने में सहायता मिलती है। इस आसन में आप जब नीचे की ओर झुकते है तो इससे जांघों और घुटनों में भी मजबूती आती है। इस योगासन से हाई ब्लड प्रेशर, अस्थमा, साइनोसाइटिस और ऑस्टियोपोरोसिस में आराम मिलता है।

अधिकतर महिलाओं को उठने-बैठने और झुकने में पीठ व कमर में दर्द की परेशानी रहती है। समस्या से निजात के लिए कुछ योगासन के अभ्यास से भी पीठ व कमर दर्द की परेशानी को कम किया जा सकता है और पोस्चर में सुधार लाया जा सकता है।

हंसना मना है

पप्पू ने एक लड़की को प्रपोज किया, तो लड़की ने पप्पू को खूब पीटा। चप्पल से पीटा, लाठी से पीटा, और बहुत घसीट - घसीट के पीटा। पप्पू उठा और कपड़े झाड़ते हुए बोला, तो फिर मैं इंकार समझूं।

किसी बारात में दुल्हन को घूंघट में देख पप्पू शादी कराने वाले पंडित से बोला- लो यहां भी दुल्हन घूंघट में है। पप्पू की बात सुन पंडित मुस्कुरा उठे...पप्पू-पंडित जी, दुल्हन घूंघट में काहे है। पंडित जी बोले-बेटा, तुम्हारी तो हो नहीं रही है... तुम्हारे जैसे कितने पप्पू हैं। उनकी भी नहीं हो रही है... अगर दुल्हन घूंघट में न रहें, तो तुम्हारे जैसे कितने पप्पू एक साथ बोल पड़ेंगे-आइला, ये तो मेरी वाली है।

एक आदमी बिना टिकट के ट्रेन से जा रहा था। टी टी- कहां जाना है। आदमी- जहां राम जी का जन्म हुआ था। टी टी- टिकट दिखाओ? आदमी- टिकट नही है? टी टी- तो फिर चलो! आदमी- कहां? टी टी- जहां कर्ष्णि जी का जन्म हुआ था।

एग्जाम शुरू होते ही बच्चे ने पेपर पर सुसु कर दिया, यह देख मैडम बोली- तुमने पेपर पर सुसु क्यों कर दिया। बच्चा बोला-मां ने कहा था... एग्जाम में पेपर मिलने के बाद जो पहले आए वही करना। इसके लिए पहले सुसु किया।

कहानी | भीष्म पितामह के पांच चमत्कारी तीर

यह बात उस समय की है, जब कुरुक्षेत्र में कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध चल रहा था। पितामह भीष्म कौरवों की ओर से युद्ध लड़ रहे थे, लेकिन कौरवों के सबसे बड़े भाई दुर्योधन को लगता था कि भीष्म पितामह पांडवों को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते हैं। दुर्योधन का मानना था कि पितामह भीष्म बहुत शक्तिशाली हैं और पांडवों को मारना उनके लिए बहुत आसान है। इसी सोच में डूबा दुर्योधन, भीष्म पितामह के पास पहुंचा। दुर्योधन ने पितामह से कहा कि आप पांडवों को मारना नहीं चाहते, इसीलिए आप किसी शक्तिशाली हथियार का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। दुर्योधन की बात सुनकर भीष्म बोले, अगर तुम्हें ऐसा लगता है, तो मैं कल ही पांचों पांडवों को मार गिराऊंगा। मेरे पास पांच चमत्कारी तीर हैं, जिनका उपयोग मैं कल युद्ध में करूंगा। भीष्म पितामह की बात सुनकर दुर्योधन बोला, मुझे आप पर भरोसा नहीं है, इसलिए आप ये पांचों चमत्कारी तीर मुझे दे दीजिए। मैं इन्हें अपने कमरे में सुरक्षित रखूंगा।' भीष्म ने वो पांचों तीर दुर्योधन को दे दिए। दूसरी ओर श्रीकृष्ण को इस बात का पता चल गया। उन्होंने अर्जुन को इस बात की जानकारी दी। अर्जुन यह सुनकर घबरा गया और सोचने लगा कि इस मुसीबत से कैसे बचा जाए। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को याद दिलाया कि एक बार तुमने दुर्योधन को गंधर्वो से बचाया था, तब दुर्योधन ने तुमसे कहा था कि इस अहसान के बदले तुम भविष्य में मुझसे कुछ भी मांग सकते हो। यह सही समय है, तुम दुर्योधन से वो पांच चमत्कारिक तीर मांग लाओ। इस तरह तुम्हारी और तुम्हारे भाइयों की जान बच सकती है। अर्जुन को श्रीकृष्ण की सलाह बिल्कुल सही लगी। उसे दुर्योधन का दिया वचन याद आ गया। ऐसा कहा जाता है कि उस समय सब अपने दिए गए वचन जरूर निभाते थे। वचन तोड़ना नियम के खिलाफ माना जाता था। अर्जुन ने जब दुर्योधन को उसका दिया वचन याद दिलाया और पांच तीर मांगे, तो दुर्योधन मना नहीं कर सका। दुर्योधन ने अपना वचन निभाया और वो तीर अर्जुन को दे दिए। इस तरह श्रीकृष्ण ने अपने भक्त पांडवों की रक्षा की।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष विद्यार्थी वर्ग सफलता अर्जित करेगा। पठन-पाठन में मन लगेगा। दूर यात्रा की योजना बन सकती है। मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा।

वृषभ वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी के व्यवहार से क्लेश हो सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। दुःखद समाचार मिल सकता है, धैर्य रखें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें।

मिथुन आज धन का निवेश न करें। शत्रु नतमस्तक होंगे। विवाद को बढ़ावा न दें। प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में वृद्धि हो सकती है।

कर्क लेन-देन में सावधानी रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। परिवार में तनाव रह सकता है। शुभ समाचार मिलेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

सिंह रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। सट्टे व लॉटरी से दूर रहें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी।

कन्या अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। किसी विवाद में उलझ सकते हैं। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

तुला बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आय के नए स्रोत प्राप्त हो सकते हैं। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। बेचैनी रहेगी।

वृश्चिक नई आर्थिक नीति बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। समय का लाभ लें।

धनु बेचैनी रहेगी। चोट व रोग से बचें। काम का विरोध होगा। तनाव रहेगा। कोर्ट व कचहरी के काम अनुकूल होंगे। पूजा-पाठ में मन लगेगा।

मकर आज धन का निवेश न करें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। विवाद से क्लेश संभव है। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। तनाव रहेगा।

कुम्भ कष्ट, भय, चिंता व बेचैनी का वातावरण बन सकता है। कोर्ट व कचहरी के काम मनोनुकूल रहेंगे। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी।

मीन भूमि, भवन, दुकान व फैक्टरी आदि के खरीदने की योजना बनेगी, जल्दबाजी न करें। रोजगार में वृद्धि होगी। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

मजबूरी में करना पड़ा था एडल्ट फिल्मों में काम : दुर्गेश कुमार

ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम पर धूम मचाने वाली सीरीज पंचायत 3 का क्रेज लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। सीरीज के छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कैरेक्टर ने लोगों के दिलों को छूआ है। सचिव जी और प्रधान जी के अलावा दुर्गेश कुमार ने लोगों को जीता है। पंचायत वेब सीरीज में भूषण के किरदार को काफी दिलचस्प तरीके से दिखाया गया है। गांव की राजनीति में बनराकस यानी कि दुर्गेश कुमार का किरदार काफी अहम रहा है। पहले सीजन में दुर्गेश का किरदार काफी छोटा था। दूसरे सीजन में वह इस सीरीज का अहम हिस्सा बन गए थे। वहीं तीसरे सीजन में वह पहले से भी ज्यादा मनोरंजन करते दिख रहे हैं। दुर्गेश जब थिएटर कर रहे थे, तब वह अक्सर मनोज बाजपेयी की अखबार में तस्वीर देखते थे और कहते थे कि जब बिहार का ये लड़का फिल्मों में हीरो बन सकता है, तो वह भी कुछ न कुछ कर ही लेंगे। जब उन्हें शो के ऑफर आने लगे, तो दिल्ली से मुंबई आने में काफी दिक्कत हुई। छोटे-मोटे किरदार तो मिल रहे थे, लेकिन अच्छा काम नहीं मिल रहा था। खर्च निकालना मुश्किल हो रहा था। दुर्गेश कुमार ने हाईवे, सुल्तान, फ्रीकी अली जैसी फिल्मों में छोटे-मोटे रोल किए हैं। लेकिन एक वक्त ऐसा भी आया, जब उनके पास काम नहीं था। दुर्गेश ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया था कि जब वह इस मुश्किल दौर में थे, तब उन्होंने सॉफ्ट पोर्न फिल्मों में भी काम किया था। उन्होंने कहा, मैं एक्टिंग के बिना नहीं रह सकता। किरदार कैसा भी हो मैं उसमें अपना सबकुछ दे देता हूं। दुर्गेश डिप्रेशन का शिकार हो गए थे। एक्टर ऑडिशन देते, लेकिन हर बार रिजेक्ट हो जाते थे। इसी बीच उन्हें पंचायत का ऑफर मिल गया था। इसमें एक सीन है, जिसमें दुर्गेश कुमार कहते हैं, सचिव जी, ये क्या लिखवा रहे हैं। चंद शब्दों का ये डायलॉग दुर्गेश कुमार ने जिस अंदाज में बोला, वो ऐसा वायरल हुआ कि वह सबके फेवरिट बन गए।

शोनाली बोस की अगली फिल्म में रानी मुखर्जी की होगी एंट्री!

बॉलीवुड | मसाला

रानी मुखर्जी ने इंडस्ट्री में एक से बढ़कर एक फिल्मों में काम किया है। अपने करीब 25 वर्ष के करियर में उन्होंने कई सफल फिल्मों में काम किया है। लंबे अंतराल के बाद बीते वर्ष वे फिल्म मिसेज चटर्जी वर्सस नॉर्वे में नजर आईं। इस फिल्म में उनके अभिनय की दिल खोलकर तारीफे हुईं। इसके बाद रानी के प्रशंसकों को उनकी अगली फिल्म का इंतजार है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अपने अगले प्रोजेक्ट के लिए रानी की बातचीत शोनाली बोस से चल रही हैं।

मार्गरीटा विद ए स्ट्रॉ और द स्काई इज पिंक जैसी फिल्मों के लिए मशहूर शोनाली बोस की अगली फिल्म में रानी मुखर्जी काम कर सकती हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि रानी पिछले दो वर्षों से कई स्क्रिप्ट पढ़ रही हैं। इस दौरान उन्हें सबसे ज्यादा शोनाली बोस की अगली फिल्म की स्क्रिप्ट पसंद आई है। कहा जा रहा है कि यह एक पारिवारिक ड्रामा फिल्म है। सितंबर 2024 से टीम इस पर काम शुरू करेगी। फिलहाल इस फिल्म के प्री-प्रोडक्शन का काम चल रहा है।

सूत्रों के मुताबिक निर्माता फिल्म के मुख्य किरदार के तौर पर किसी बड़े ए-लिस्ट अभिनेता को लेना चाहते हैं। रानी मुखर्जी के साथ एक लीड एक्टर होगा। इसके अलावा कई और चर्चित कलाकार इसमें जुड़ेंगे। फिल्म के बारे में अधिक जानकारी जल्द ही सामने आएगी। फिलहाल यह कहा जा रहा है कि तलवार, राजी और बधाई हो जैसी फिल्मों को प्रोड्यूस कर चुके निर्माता ही इस फिल्म के प्रोडक्शन की जिम्मेदारी संभालेंगे।

शोनाली बोस द्वारा निर्देशित इस फिल्म की शूटिंग सितंबर में शुरू होगी। वर्ष 2024 के आखिर तक शूटिंग पूरी होगी और 2025 में इसे रिलीज किए जाने की तैयारी है। शोनाली बोस निर्देशित इस फिल्म की शूटिंग पूरी करने के बाद रानी मुखर्जी मर्दानी 3 पर काम करेंगी। अभी सफल मर्दानी फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है।

मीनाक्षी शेषाद्रि ने सनी देओल की जमकर की तारीफ

बॉलीवुड | मसाला

80 के दशक की खूबसूरत एक्ट्रेस मीनाक्षी शेषाद्रि को उनकी फिल्मों और एक्टिंग के लिए बॉक्स ऑफिस पर खूब सराहना मिली है। मीनाक्षी ने पेंटर बाबू फिल्म से फिल्मी करियर शुरू किया था। मगर पॉपुलैरटी हीरो से मिली थी। इस फिल्म ने उन्हें रातोंरात स्टार बना दिया था। इसके बाद मीनाक्षी निर्माताओं की पहली पसंद बन गई थीं।

मीनाक्षी शेषाद्रि ने अपने करियर में अनिल कपूर, अमिताभ बच्चन जैसे एक्टर्स के साथ फिल्में की हैं। उनकी तमाम हिट फिल्मों में एक फिल्म डकैत 1987 में रिलीज हुई थी। फिल्म में वह सनी देओल के साथ नजर आई थीं। फिल्म को काफी पसंद किया गया था। इस फिल्म में

मीनाक्षी का सनी देओल के साथ किसिंग सीन था, जिसके बारे में एक्ट्रेस ने हाल में खुलकर बात की है। उन्होंने फिल्म में सनी देओल के साथ करने के एक्सपीरियंस को शेयर करते हुए एक्टर के नेचर के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि एक्टर बेहद जेंटलमेन हैं। इंटरव्यू में मीनाक्षी शेषाद्रि ने कहा कि सनी के साथ किसिंग सीन करने को लेकर वह बहुत नर्वस थीं। उन्होंने कहा, हम दोनों को एक रोमांटिक गाना करना था, जिसमें हम एक नांव में थे और गाना शुरू होने से पहले उन्होंने मुझे किस किया। यह किस असली था। यह मेरे लिए थोड़ा परेशान करने वाला था क्योंकि मैं बहुत रूढ़िवादी हूं। बता दें कि लेकिन ये सीन फिल्म में नहीं दिखाया गया था, सेंसर बोर्ड ने इसे काट दिया था।

अजब-गजब | यहां सांस लेने पर हो सकते हैं बीमार

कॉकरोचों से भरा है सबसे गंदा शहर

अगर आप सोचते हैं कि अमेरिका जैसे विकसित देश के सभी शहर बहुत अच्छा और साफ सुथरे होते हैं, तो आप सही नहीं हैं। एक अमेरिकी शहर ऐसा भी है जो गंदगी के लिए ज्यादा ही जाना जाता है। इसके बारे में कहा जाता है कि उसके घरों में कीड़े रेंगते रहते हैं और यह इतना खराब है कि हवा में सांस लेने से भी आप बीमार हो सकते हैं। एक सर्वे में उसे अमेरिका के सबसे गंदे शहरों में से एक बताया गया है।

लॉनस्टार्टर द्वारा 2023 के एक अध्ययन में, राज्यों के 150 से अधिक सबसे बड़े शहरों की तुलना चार समूहों में की गई ताकि यह देखा जा सके कि कौन शीर्ष पर आएगा। समूह में प्रदूषण, रहने की स्थिति, बुनियादी ढांचा और ग्राहकों की संतुष्टि जैसी बातों का ध्यान रखा गया था।

सबसे अधिक औसत अंक पाने वाले शहर को 'सबसे गंदा' दर्जा दिया गया, जबकि सबसे कम औसत अंक वाले शहर को सबसे साफ शहर का दर्जा दिया गया। इस तरह से सर्वे के मुताबित अमेरिका का सबसे गंदा शहर टेक्सास का ह्यूस्टन है, जिसे सबसे गंदे शहर का दर्जा मिला है।

स्पेस सिटी रैंकिंग के कूड़े के ढेर में सबसे ऊपर आ गया, जिसने अपने पूर्ववर्ती नेवार्क, न्यू जर्सी को दूसरे स्थान पर धकेल दिया है। ह्यूस्टन का सम्मान इसकी भयानक वायु गुणवत्ता, बुनियादी

ढांचे की समस्याओं और घरों में घुसने वाले कीड़ों की चौंका देने वाली संख्या के कारण मिला है।

लॉनस्टार्टर की सहयोगी साइट पेस्टग्नोम ने डेटा निकाला, जिसमें दिखाया गया कि ह्यूस्टन में कॉकरोच की सबसे खराब समस्या है, शहर में खौफनाक जीव रेंग रहे हैं। कई लोगों का कहना था कि इन हालातों में रहना उनके लिए जीवन का एक तरीका बन गया था। 2023 में उत्तरी ह्यूस्टन के क्रैनब्रुक फ़ॉरेस्ट अपार्टमेंट के निवासियों ने कहा कि वे चूहों के साथ-साथ अन्य समस्याओं से भी तंग आ चुके हैं, जिनसे वे जूझ रहे थे।

घोड़े से भी तेज भागता है ये सांप, घबराने की जरूरत नहीं क्योंकि ये विषैले नहीं होते

सांपों के बारे में लोग ज्यादा से ज्यादा जानना तो चाहते हैं लेकिन कोई भी नहीं चाहता कि उसका सामना कभी किसी भी सांप से हो। अब उनकी प्रजाति को लेकर किसी को इतनी जानकारी नहीं होती कि वो कितना खतरनाक है लेकिन सांप को आंखों के सामने देखते ही शरीर में सिहरन दौड़ जाती है। सोचिए अगर कोई सांप तेज़ रफ्तार से आपका पीछा करने लगे, तो हालत क्या होगी? चलिए आपको आज एक ऐसे ही सांप के बारे में बताते हैं, जो इतना तेज़ दौड़ाता है कि शिकार के पसीने छूट जाएं।

वैसे तो सांप को देखते ही हमारी दिल की धड़कनें बढ़ जाती हैं, भले ही वो ज़हरीला हो या नहीं। आज हम आपको एक ऐसे सांप के बारे में बताएंगे, जो घोड़े से भी तेज़ रफ्तार से दौड़ सकता है। इसे दौड़ता देखकर ही किसी का भी दिमाग शून्य होने लगेगा। ये भारत का सबसे तेज़ दौड़ने वाला सांप है, जिसे रैटस्नेक कहा जाता है। इसका नाम रैटस्नेक इसलिए है क्योंकि इसे खाने में चूहे पसंद हैं। बरसात के मौसम में ये सांप खूब देखा जाता है। इनका रंग कई तरह का हो सकता है। भारत में ये भूरे या स्लेटी रंग का होता है तो अमेरिका में ये पीले ही होते हैं। इनके शरीर पर धारियां होती हैं और लंबाई 6 से 10 फीट होती है। इनकी रफ्तार इतनी तेज़ होती है कि पलक झपकते ही ये गायब हो जाते हैं। इस सांप को भारत में घोड़ा पछाड़ सांप भी कहा जाता है क्योंकि इसकी रफ्तार घोड़े से भी तेज़ होती है। कई जगहों पर इसे धमीना सांप भी कहा जाता है। दिलचस्प बात ये है कि अगर ये सांप आपके पीछे पड़ भी गया, तो आपको डरने की ज़रूरत नहीं है। ये सांप ज़हरीले नहीं होते हैं, ऐसे में इंसानों से लिए ये बिल्कुल खतरनाक नहीं है। सिर्फ इसकी रफ्तार देखकर आप सकते में आ सकते हैं।

उद्धव-शरद को जनता ने माना असली शिवसेना और एनसीपी

» दोनों दलों को मिली जनता की सहानुभूति

» महाराष्ट्र में भाजपा हो गई चौपट, कांग्रेस बनी सबसे बड़ी पार्टी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सीएम पद को लेकर हुई थी भाजपा-शिवसेना में तनातनी

महाराष्ट्र में पिछला चुनाव भाजपा और शिवसेना (अविभाजित) ने मिलकर लड़ा था और राज्य की 48 सीटों में से 41 पर कब्जा किया था। बाद में दोनों पार्टियों ने विधानसभा चुनाव भी साथ मिलकर लड़ा और बंपर जीत हासिल की, लेकिन सीएम पद को लेकर दोनों पार्टियों में ठन गई। नतीजा ये हुआ कि शिवसेना ने गठबंधन तोड़कर एनसीपी और कांग्रेस के साथ मिलकर महाविकास अघाड़ी की सरकार बना ली। इस बीच साल 2022 में शिवसेना के वरिष्ठ नेता एकनाथ शिंदे ने बगावत कर पार्टी तोड़ ली और भाजपा के साथ गठबंधन करके सीएम बन गए। वहीं लंबे समय से सत्ता में आने की जुगत में लगे अजित पवार ने भी अपने चाचा और एनसीपी मुखिया शरद पवार के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंक दिया।

मुंबई। जनता ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में अपना जनादेश सुना दिया है। 400 सीटें जीतने का दंभ भरने वाली बीजेपी अबकी अकेले दम पर पूर्ण बहुमत भी हासिल नहीं कर सकी है। हालांकि, एनडीए गठबंधन ने बहुमत के आंकड़े को पा लिया है। वहीं विपक्ष के इंडिया गठबंधन ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए 234 सीटों पर जीत हासिल की है। इस बार के नतीजों ने कई राज्यों में चौंकाया है।

जिन राज्यों के चुनाव नतीजे भाजपा के अनुरूप नहीं आए हैं, उनमें महाराष्ट्र भी प्रमुख है। इस राज्य में 2019 के चुनाव में 23 सीटे जीतने वाली भाजपा इस बार नौ सीटों पर ही सिमटकर रह गई है। वहीं पिछले चुनाव में एक सीट जीतने वाली कांग्रेस इस बार 13 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। इन चुनाव नतीजों से एक बात साफ हुई है कि उद्धव ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार की एनसीपी को लोगों की सहानुभूति मिली है और जनता ने इन्हीं दोनों को असली शिवसेना और एनसीपी माना है।

शिवसेना यूबीटी और एनसीपी एसपी ने बगावत, टूट देखी और दोनों के चुनाव चिन्ह छिन गए, यहां तक कि नाम भी बदलने पड़े, इसके बावजूद जनता ने इन दोनों पार्टियों को असली का तमगा देते हुए खूब सीटें दीं। महाराष्ट्र में शिवसेना यूबीटी को नौ और एनसीपी एसपी को 8 सीटों पर जीत मिली है। भाजपा नौ सीटों पर सिमट गई है, जबकि कांग्रेस 13 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। एकनाथ शिंदे की शिवसेना को सात और अजित पवार की एनसीपी को सिर्फ एक सीट पर जीत मिली है। एक सीट निर्दलीय के खाते में गई है। जोरदार जीत के बाद शिवसेना यूबीटी के पार्टी कार्यालय के बाहर पोस्टर भी लग गए, जिनमें लिखा था कि कौन असली शिवसेना है? जनता ने ये बता दिया है।

महाराष्ट्र की जनता पर है गर्व : शरद पवार

अब लोकसभा चुनाव के नतीजों से साफ हो गया है कि भले ही चुनाव आयोग ने शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी को असली माना, लेकिन जनता शायद ऐसा नहीं मानती और इस सहानुभूति का फायदा उद्धव ठाकरे और शरद पवार की पार्टियों को मिले जनसमर्थन के रूप में दिखा। चुनाव नतीजों के बाद शरद पवार ने राज्य की जनता को धन्यवाद भी दिया और कहा कि उन्हें महाराष्ट्र की जनता पर गर्व है।

दिल्ली में हार कर भी फायदे में रही आम आदमी पार्टी

» वोट प्रतिशत में हुई 6 फीसदी की बढ़ोत्तरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद अब सभी राजनीतिक दल और उनके नेता अपनी-अपनी समीक्षा करने में जुट गए हैं। कहीं लोगों की उम्मीदों के मुताबिक परिणाम आए हैं, तो वहीं कई जगहों पर नतीजों ने सभी को चौंकाया है। इस बीच दिल्ली की सत्ताधारी दल आम आदमी पार्टी को इस बार दिल्ली में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद थी। लेकिन नतीजों में ऐसा नहीं हुआ और एक बार फिर दिल्ली की सभी सात सीटों पर बीजेपी ने फिर से भगवा लहराया।

लेकिन दिल्ली में एक भी सीट न जीत पाने के बाद भी सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के लिए राहत की बात यह रही कि इस बार के चुनाव में उसके मत प्रतिशत में 2019 के चुनावों की तुलना में लगभग छह फीसदी की बढ़ोतरी हुई है, जबकि सातों सीटों पर विजयी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का यह आंकड़ा पिछले चुनावों की तुलना में दो प्रतिशत गिर गया। कांग्रेस ने दिल्ली में तीन सीट पर चुनाव लड़ा था लेकिन वह एक भी सीट नहीं जीत पाई और 2019 के चुनाव की तुलना में उसका मत प्रतिशत तीन अंक से अधिक घट गया।

बीजेपी और कांग्रेस को लगा झटका

इस बार भाजपा को 54.35 प्रतिशत मत मिले और उसने लगातार तीसरी बार दिल्ली की सभी सातों लोकसभा सीट कब्जा जमाया। वर्ष 2019 में यह आंकड़ा 56.7 प्रतिशत और 2014 में 46.6 प्रतिशत था। पूर्वी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली, नयी दिल्ली और दक्षिण दिल्ली सीट पर चुनाव लड़ने वाली 'आप' एक भी सीट नहीं जीत सकी। हालांकि, 2019 के चुनावों में 18.2 की तुलना में उसने 24.17 प्रतिशत मत हासिल किए। वर्ष 2014 के आम चुनावों में 'आप' का मत प्रतिशत 33.1 था, लेकिन वह सभी सात सीट हार गई थी। इस बार विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' ('इंडिया') के सहयोगी आप और कांग्रेस ने सीट बंटवारे के तहत भाजपा को सीधी टक्कर दी। कांग्रेस ने उत्तर पूर्वी दिल्ली, उत्तर पश्चिमी दिल्ली और चांदनी चौक सीट पर चुनाव लड़ा और तीनों सीटों पर हार गई। कांग्रेस को 18.94 प्रतिशत वोट मिले, जबकि 2019 के चुनावों में यह आंकड़ा 22.6 प्रतिशत था। हालांकि, यह 2014 के चुनावों में पार्टी के मत प्रतिशत 15.2 से अधिक था।

नीट परीक्षा पास कर परिवार का बढ़ाया मान

» परिवार में खुशी का माहौल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा नीट परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया है। इस साल 13.16 लाख बच्चों ने नीट परीक्षा पास की है। नीट यूजी में 67 उम्मीदवार रैंक 1 पाने में सफल रहे हैं।

इस बीच उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के रहने वाले नोमान साजिद ने भी नीट परीक्षा पास करके अपने परिवार का नाम रोशन किया है। नोमान की 11636वीं रैंक आई है। इसके साथ उन्होंने 675 अंक हासिल किए हैं। नोमान की सफलता से उनके माता-पिता व परिवार के लोग काफी खुश हैं।

वायनाड या रायबरेली में से किसे छोड़ेंगे राहुल गांधी

» बोले- अभी तक नहीं लिया फैसला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रायबरेली और वायनाड दोनों ही लोकसभा क्षेत्रों से जीत हासिल की है। ऐसे में अब नियम के मुताबिक, राहुल गांधी को एक सीट छोड़नी पड़ेगी। अब सवाल ये ही कि राहुल कौन सी सीट को छोड़ेंगे क्या वो रायबरेली छोड़ेंगे या फिर वायनाड में किसी और को लड़ाएंगे।

इस बारे में बात करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि उन्होंने अभी तक यह निर्णय नहीं लिया है कि वह लोकसभा में किस सीट का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह पूछे जाने पर कि वह लोकसभा में किस सीट का प्रतिनिधित्व करेंगे, राहुल गांधी ने कहा कि मैंने दोनों सीट से जीत हासिल की है और मैं रायबरेली एवं वायनाड के मतदाताओं को तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं। अब मुझे तय करना है कि मैं किस सीट का प्रतिनिधित्व करूंगा। मैं इस बारे में चर्चा करूंगा और फिर फैसला करूंगा। मैं दोनों सीट का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, लेकिन मैंने अभी तक फैसला नहीं किया है। राहुल ने बाद में सोशल मीडया मंच पर एक वीडियो संदेश साझा करते हुए उन्हें मिले भारी समर्थन के लिए वायनाड और रायबरेली के लोगों को फिर से धन्यवाद दिया। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि मुझसे पूछा जा रहा है कि क्या मैं वायनाड से सांसद रहूंगा या रायबरेली से। मैं दोनों जगहों से सांसद रहना चाहता हूं। आप सभी को बधाई।

उत्तर प्रदेश के लोगों का दिया खास धन्यवाद

जाहिर है कि राहुल गांधी ने वायनाड सीट पर 3.6 लाख से अधिक मतों के अंतर से और रायबरेली सीट पर 3.9 लाख से अधिक मतों के अंतर से जीत हासिल की।उन्होंने उत्तर प्रदेश में 'इंडिया' गठबंधन के अच्छे प्रदर्शन के बाद राज्य के लोगों की राजनीतिक समझदारी दिखाने के लिए प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मेरा मतलब है कि उत्तर प्रदेश के लोगों ने कमाल कर दिया है। कई राज्यों ने कमाल किया है, लेकिन उत्तर प्रदेश ने भारत की राजनीति को समझकर, संविधान पर खतरे को समझकर संविधान की रक्षा की है। मैं सभी राज्यों को धन्यवाद देना चाहता हूं लेकिन मैं उत्तर प्रदेश (के लोगों) से खासतौर पर कहना चाहता हूं कि आपने कांग्रेस पार्टी, 'इंडिया' गठबंधन का साथ दिया। गांधी ने राज्य में कड़ी मेहनत करने के लिए अपनी बहन प्रियंका गांधी वाद्रा को भी धन्यवाद दिया।

जीत के साथ शुरूआत करने उतरेगा भारत

टी-20 विश्वकप

» आयरलैंड से पहला मुकाबला आज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

न्यूयॉर्क। आईसीसी टी20 विश्वकप 2024 में आज टीम इंडिया अपने अभियान की शुरूआत करेगा। आज रात 8 बजे से टीम इंडिया अपना पहला मुकाबला आयरलैंड के साथ न्यूयॉर्क के नसाऊ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेलेगा। भारतीय टीम और पूरे देश के प्रशंसकों को इस बार टीम इंडिया से बड़ी उम्मीदें हैं। साथ ही ये आस भी है कि रोहित शर्मा की अगुवाई में भारतीय टीम 11 साल से आईसीसी ट्रॉफी का सूखा खत्म करेगी।

इस मैच में भारतीय टीम की प्लेइंग 11 कैसी होगी, इस पर सभी की नजरें रहेंगी। न्यूयॉर्क में पहले मैच में जो भी प्लेइंग 11 रोहित शर्मा उतारेंगे, उसे देखकर यह बात मानी जा सकती है कि वही टीम पूरे टूर्नामेंट में खेलेगी। सबसे बड़ा सवाल यह रहेगा कि ओपनिंग कौन करेगा और विकेटकीपर कौन होगा। विकेटकीपर के रूप में ऋषभ पंत को संजू सैमसन पर तरजीह मिलनी तय है।

यशस्वी को लेकर सस्पेंस बरकरार

कप्तान रोहित और कोहली के लिए यशस्वी जायसवाल को बाहर रहना पड़ सकता है। ऋषभ पंत ने अभ्यास मैच में तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी की और हार्दिक पंड्या ने अच्छी गेंदबाजी की। पंड्या ने अभ्यास सत्र में कोहली, सूर्यकुमार यादव और रोहित को अच्छी खासी गेंदबाजी की।

बुमराह के कंधों पर होगी बॉलिंग की जिम्मेदारी

37 साल के रोहित का यह आखिरी वर्ल्ड कप माना जा रहा है, यह लगभग तय है कि वह भारत में होने वाले अगले टी20 वर्ल्ड कप और दक्षिण अफ्रीका में 2027 में होने वाले 50 ओवरों के वर्ल्ड कप तक नहीं खेलेंगे। भारत को फायदा इस बात का है कि उसके पास आयरलैंड से बेहतर स्पिनर हैं। हालांकि बुमराह के अलावा तेज गेंदबाजी आक्रमण थोड़ा कमजोर लग रहा है। क्योंकि मोहम्मद सिराज और अर्शदीप सिंह के पास बुमराह जैसी स्किल्स नहीं हैं, क्योंकि दोनों का आईपीएल का प्रदर्शन वैसा नहीं रहा है। कुल मिलाकर गेंदबाजी की धार कुलदीप यादव और जसप्रीत बुमराह पर रहेगी।

यूपी के नये नायक बनकर उभरे अखिलेश

भाजपा हुई पसीने-पसीने

सपा प्रमुख की कुशल रणनीति व सोशल इंजीनियरिंग का दिखा असर

लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। देश के लोकतंत्र का महापर्व अब पूरा हो चुका है। जनता ने अपना जनादेश सुना दिया है। इस जनादेश से स ाधारी दल भाजपा को तगड़ा झटका लगा है और अबकी बार 400 पार की उ मीदें लेकर चल रही बीजेपी 250 के आंकड़े को भी तरस गई है। बीजेपी को इस बार सबसे अधिक झटका देश में सर्वाधिक सीटों वाले राज्य उ ार प्रदेश में लगा है, जहां उसे सबसे अधिक उ मीद थी। उ ार प्रदेश में अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया और 37 लोकसभा सीटें जीतकर देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। अखिलेश यादव की कुशल रणनीति ने उन्हें उ ार प्रदेश का नायक बना दिया। आलम ये हो गया कि जिस उ ार प्रदेश में भाजपा सबसे अधिक उ मीदें पाले बैठी थी और खुद को अजेय मानकर चल रही थी, उसी उ ार प्रदेश में बीजेपी को अखिलेश यादव ने ऐसी पटखनी दी कि बीजेपी पसीने-पसीने हो गई।

37 सीटें जीतकर सपा बनी देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी

गठबंधन के तहत 62 सीटों पर लड़ा चुनाव

राजनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण यूपी में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने विपक्ष के अभियान का नेतृत्व किया। सपा ने गठबंधन के तहत 62 सीटों पर चुनाव लड़ा। 17 सीटें कांग्रेस और एक सीट तृणमूल कांग्रेस को दी। सीट शेयरिंग की यह रणनीति काफी कारगर साबित हुई। कांग्रेस के साथ साझेदारी करने के चलते सपा मतदाताओं को यह मनोवैज्ञानिक संदेश देने में सफल रही कि राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा का विकल्प मौजूद है।

ये प्रदर्शन समाजवादी पार्टी का लोकसभा चुनाव के इतिहास में उसका सबसे अच्छा प्रदर्शन है। ये जीत अखिलेश के नेतृतव और कुशल रणनीति की देन है। सपा के लिए ये जीत इसलिए भी और अहम हो जाती है क्योंकि ये सपा संस्थापक मुलायस सिंह यादव के बिना पहला लोकसभा चुनाव था और सारा का सारा दारोमदार सिर्फ और सिर्फ अखिलेश यादव के ही कंधों पर था। ऐसे में अखिलेश ने अपनी सूझ-बूझ के साथ इस चुनाव में भाजपा को घेरा और उसके सबसे मजबूत किले में ही उसे पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। धार्मिक मुद्दों के बजाय जातीय गोलबंदी और यादवों-मुस्लिमों पर कम दांव की रणनीति से सपा को यह सफलता मिली। निश्चित ही इस जीत के बाद अखिलेश यादव का कद देश की राजनीति में बढ़ेगा।

लोहिया की जन्म स्थली पर लहराया समाजवादी परचम

अखिलेश यादव की सूझ-बूझ और कुशल रणनीति से ही इस बार सपा ने प्रख्यात समाजवादी डॉ. राममनोहर लोहिया की जन्म स्थली अकबरपुर पर लोकसभा के चुनाव में पहली बार समाजवादी परचम लहराया। इससे पहले लोकसभा उपचुनाव में यहां सपा प्रत्याशी शंखलाल मांझी की जीत हुई थी लेकिन लोकसभा के सामान्य चुनाव में तमाम कोशिशों के बाद भी सफलता नहीं मिल पा रही थी। अब सपा के हिस्से में दशकों से चला आ रहा सूखा दूर हुआ है। समाजवाद के प्रणेता रहे डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म अकबरपुर में ही हुआ था। लोकसभा उपचुनाव में एक बार सपा प्रत्याशी शंखलाल मांझी को जीत मिली, तब यह सीट अकबरपुर सुरक्षित के नाम थी। इस जीत से पहले या बाद के चुनाव में सपा जीत के लिए तरसती रही। वर्ष 2009 में जब परिसीमन के बाद अंबेडकरनगर सामान्य लोकसभा सीट का गठन हुआ तब हुए चुनाव में सपा प्रत्याशी बसपा के राकेश पांडेय से हार गए। 2014 के लोकसभा चुनाव में सपा के राममूर्ति वर्मा तीसरे स्थान पर रहे। 2019 के लोकसभा चुनाव में गठबंधन के चलते सपा ने यहां बसपा प्रत्याशी रितेश पांडेय का साथ दिया।

आम जनता से जुड़े रहे सपा प्रत्याशी

इस बार चुनाव में सपा से उतरे लालजी वर्मा ने शुरू से ही अत्यंत प्रभावी अंदाज में चुनाव अभियान की कमान स्वयं संभाली। पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव व महासचिव शिवपाल यादव के दौरे के अलावा उन्होंने अन्य ताम झाम पर जोर नहीं दिया। वे सिर्फ मतदाताओं व कार्यकर्ताओं को सहेजने में जुटे रहे। सपा में राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी संभाल रहे लालजी वर्मा ने आम लोगों से अंतिम चुनाव लड़ने की बात कहकर भावनात्मक अपील भी की थी। इन सबका असर यह हुआ कि सत्तारूढ़ दल की तमाम ताकत के बीच भी लालजी वर्मा जिले में पहली बार लोकसभा चुनाव में सपा का परचम लहराने में कामयाब रहे। इस जीत के साथ ही दशकों से लोहिया की धरती पर चला आ रहा संसदीय चुनाव का सूखा भी दूर हो गया।

ये जनता की जीत है, शासक की नहीं: अखिलेश

उ ार प्रदेश में सपा की शानदार जीत से उत्साहित सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने प्रदेश की जनता का आभार जताते हुए सोशल मीडिया पर लिखा कि प्रिय 'उप्र के समझदार मतदाताओं' उप्र में इंडिया गठबंधन की 'जन-प्रिय जीत' उस दलित-बहुजन भरोसे की भी जीत है जिसने अपने पिछड़े, अल्पसं यक, आदिवासी, आधी आबादी और अगड़ों में पिछड़े सभी उपेक्षित, शोषित, उत्पीड़ित समाज के साथ मिलकर उस संविधान को बचाने के लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर संघर्ष किया है जो समता-समानता, स मान-स्वाभिमान, गरिमामय जीवन व आरक्षण का अधिकार देता है। ये पीडीए के रूप में पिछड़े-दलित-अल्पसं यक-आदिवासी, आधी आबादी और अगड़ों में पिछड़े के उस मजबूत गठजोड़ की जीत है, जिसे हर समाज और वर्ग के अच्छे लोग अपने सहयोग व योगदान से और भी मजबूत बनाते हैं। ये नारी के मान और महिला-सुरक्षा के भाव की जीत है। ये नवयुवतियों-नवयुवकों के सुनहरे भविष्य की जीत है। ये किसान-मजदूर-कारोबारियों-व्यापारियों की नयी उ मीदों की जीत है ये सर्व समाज के सौहार्द-प्रिय, समावेशी सोचवाले समता-समानतावादी सकारात्मक लोगों की सामूहिक जीत है। ये निष्पक्ष, निष्कलंक मीडिया के निरंतर, अथक, निर्भय, ईमानदार प्रयासों की जीत है। ये संविधान को संजीवनी मानने वाले संविधान-रक्षकों की जीत है।

ये लोकतंत्र के हिमायती-हि मती लोगों की जीत है। ये गरीब की जीत है। ये सकारात्मक राजनीति की जीत है। ये इंडिया की टीम और पीडीए की रणनीति की जीत है। प्रिय मतदाताओं आपने साबित कर दिया है कि जनता की शक्ति से बड़ा न किसी का बल होता है, न किसी का छल। इस बार जनता ही जीती है, शासक नहीं।

फोटो: सुमित कुमार

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा** द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वि ीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in
RNI-UPHIN/2015/62233 **डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020** *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।